लकड़ी की तलवार

एक यहूदी कथा

नौकर के कपड़े पहनकर अफगान का शाह अपने लोगों के बारे में अधिक जानने के लिए अपने महल से बाहर निकलता है. वो एक गरीब यहूदी चमार से मिलता है, जिसका ईश्वर में अटूट विश्वास है. चमार के अनुसार सब कुछ ठीक ही होगा. चमार के अटूट विश्वास को देखकर अच्छा शाह उत्सुक होता है और गरीब चमार की भगवान में आस्था का परीक्षण करता है. वो यह जानना चाहता है कि क्या चमार की आस्था और आशा को किसी तरह हिलाया जा सकता है. लेकिन चमार के जीवन की सबसे बड़ी चुनौती अभी भी बाकी है!

लकड़ी की तलवार

एक यहूदी कथा

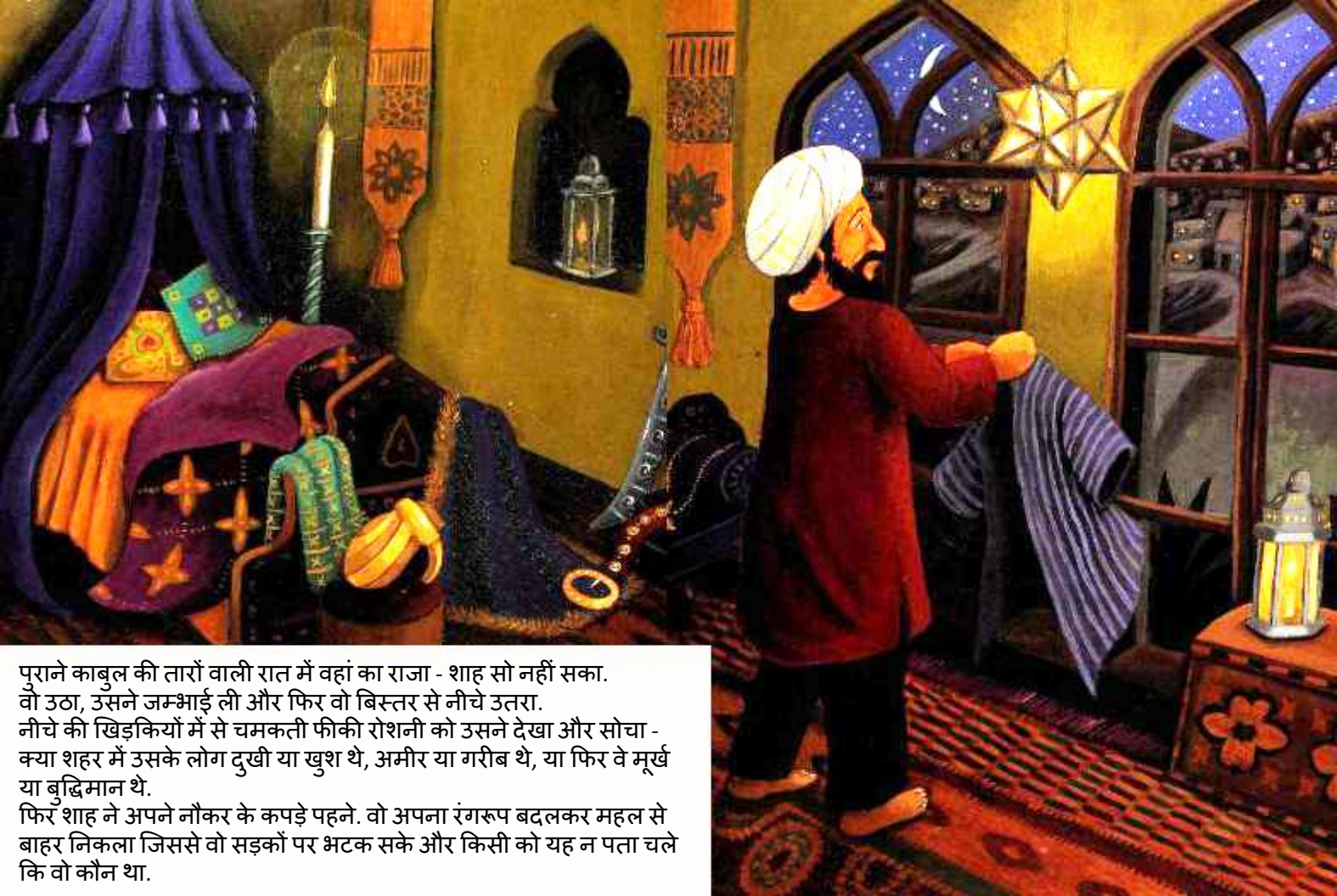

पुराने काबुल की तारों वाली रात में वहां का राजा - शाह सो नहीं सका.
वो उठा, उसने जम्भाई ली और फिर वो बिस्तर से नीचे उतरा.
नीचे की खिड़कियों में से चमकती फीकी रोशनी को उसने देखा और सोचा - क्या शहर में उसके लोग दुखी या खुश थे, अमीर या गरीब थे, या फिर वे मूर्ख या बुद्धिमान थे.
फिर शाह ने अपने नौकर के कपड़े पहने. वो अपना रंगरूप बदलकर महल से बाहर निकला जिससे वो सड़कों पर भटक सके और किसी को यह न पता चले कि वो कौन था.

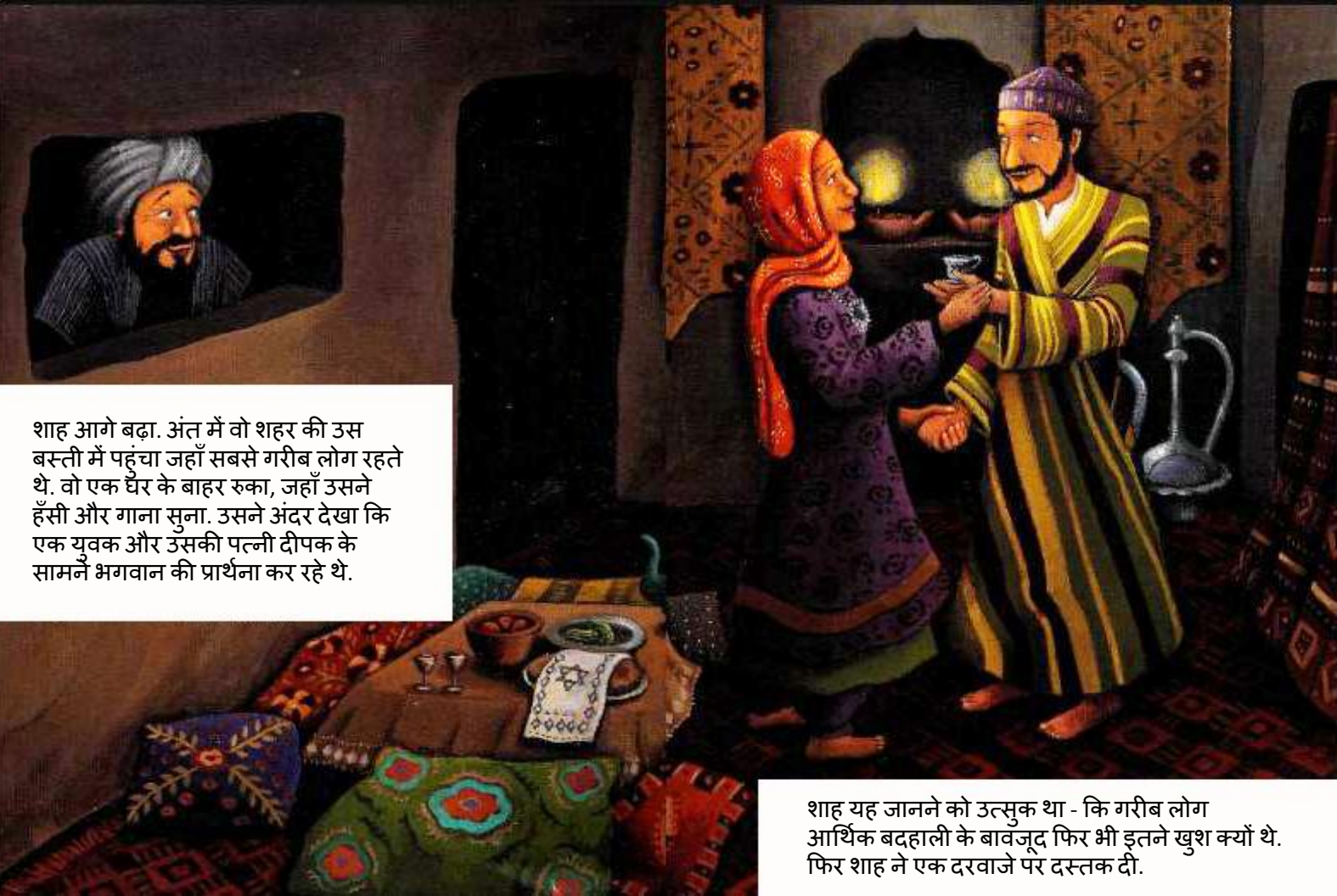

शाह आगे बढ़ा. अंत में वो शहर की उस बस्ती में पहुंचा जहाँ सबसे गरीब लोग रहते थे. वो एक घर के बाहर रुका, जहाँ उसने हँसी और गाना सुना. उसने अंदर देखा कि एक युवक और उसकी पत्नी दीपक के सामने भगवान की प्रार्थना कर रहे थे.

शाह यह जानने को उत्सुक था - कि गरीब लोग आर्थिक बदहाली के बावजूद फिर भी इतने खुश क्यों थे. फिर शाह ने एक दरवाजे पर दस्तक दी.

"अंदर आओ और खाना खाओ, थके यात्री," एक गरीब आदमी ने कहा, "हमारे पास बहुत कुछ है." पर सच्चाई यह थी कि वे बहुत गरीब थे.

"शुक्रिया," शाह ने घर के अंदर संतोष का माहौल महसूस करते हुए कहा. "आप क्या काम करते हैं? और आप इतने खुश क्यों हैं?"

"मैं एक चमार हूं. जब मैं किसी के पैर की अंगुली को जूते से बाहर निकले हुए देखता हूं, तो मैं उसके जूते की तुरंत मरम्मत करता हूं. उससे जो कमाई होती है उससे मैं रात का खाना खरीदता हूं."

"लेकिन अगर एक दिन आपकी बिल्कुल कमाई न हो, तो क्या होगा?" शाह ने पूछा.

"मैं ऐसे मामलों के बारे बिल्कुल चिंता नहीं करता हूँ," चमार ने जवाब दिया. फिर चमार ने अपनी आखिरी खुबानी काटकर मेहमान को पेश की. "अगर एक रास्ता बंद होगा तो भगवान मेरे लिए कोई दूसरा रास्ता खोलेगा, और फिर सब कुछ ठीक वैसे ही होगा जैसे कि होना चाहिए था."

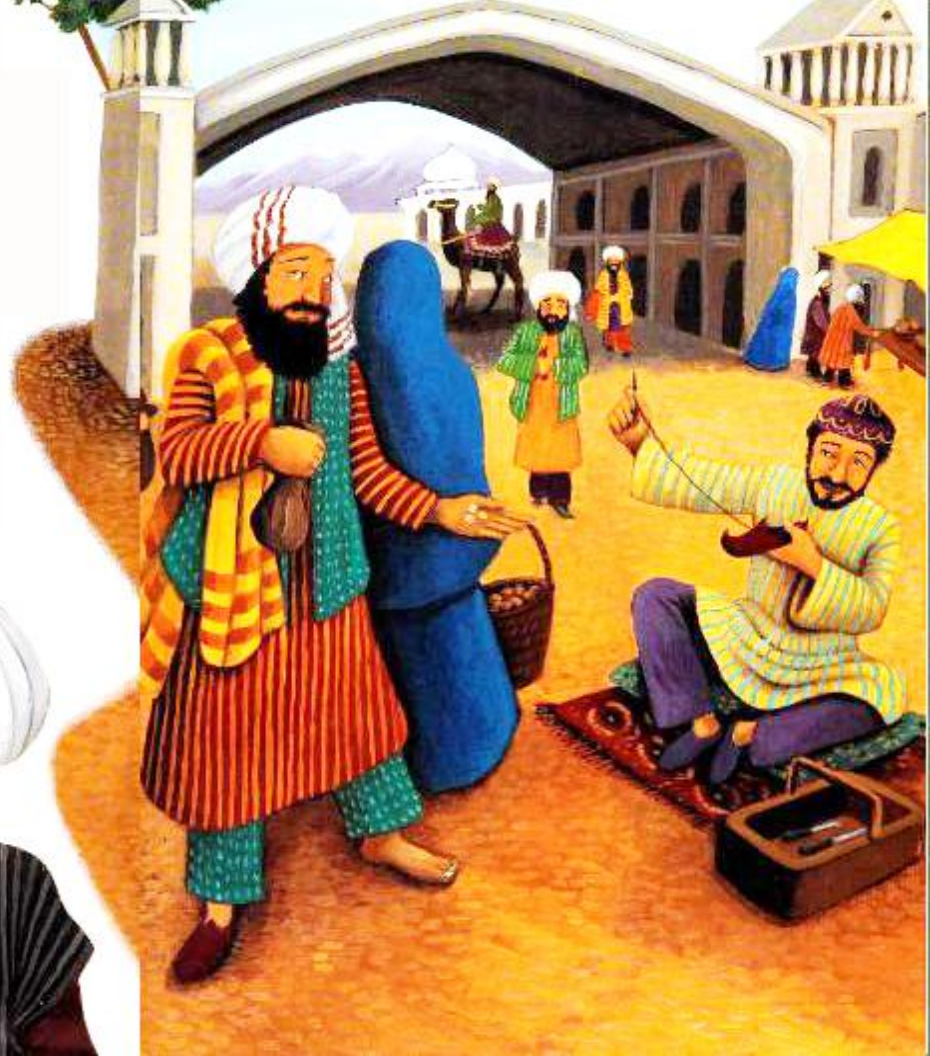

शाह, चमार की बातें सुनकर बहुत प्रभावित हुआ. लेकिन वो बहुत उत्सुक था. वो चमार के विश्वास और निष्ठा की परीक्षा लेना चाहता था. शाह ने पक्का किया कि वो उस गरीब आदमी को कोई नुकसान नहीं होने देगा, पर वो उसके विश्वास का परीक्षण अवश्य करेगा.
अगली सुबह, शाह ने शहर के प्रत्येक इलाके में दूतों को भेजकर यह ऐलान करवाया कि कोई भी सड़क पर जूतों की मरम्मत नहीं कर सकता था.

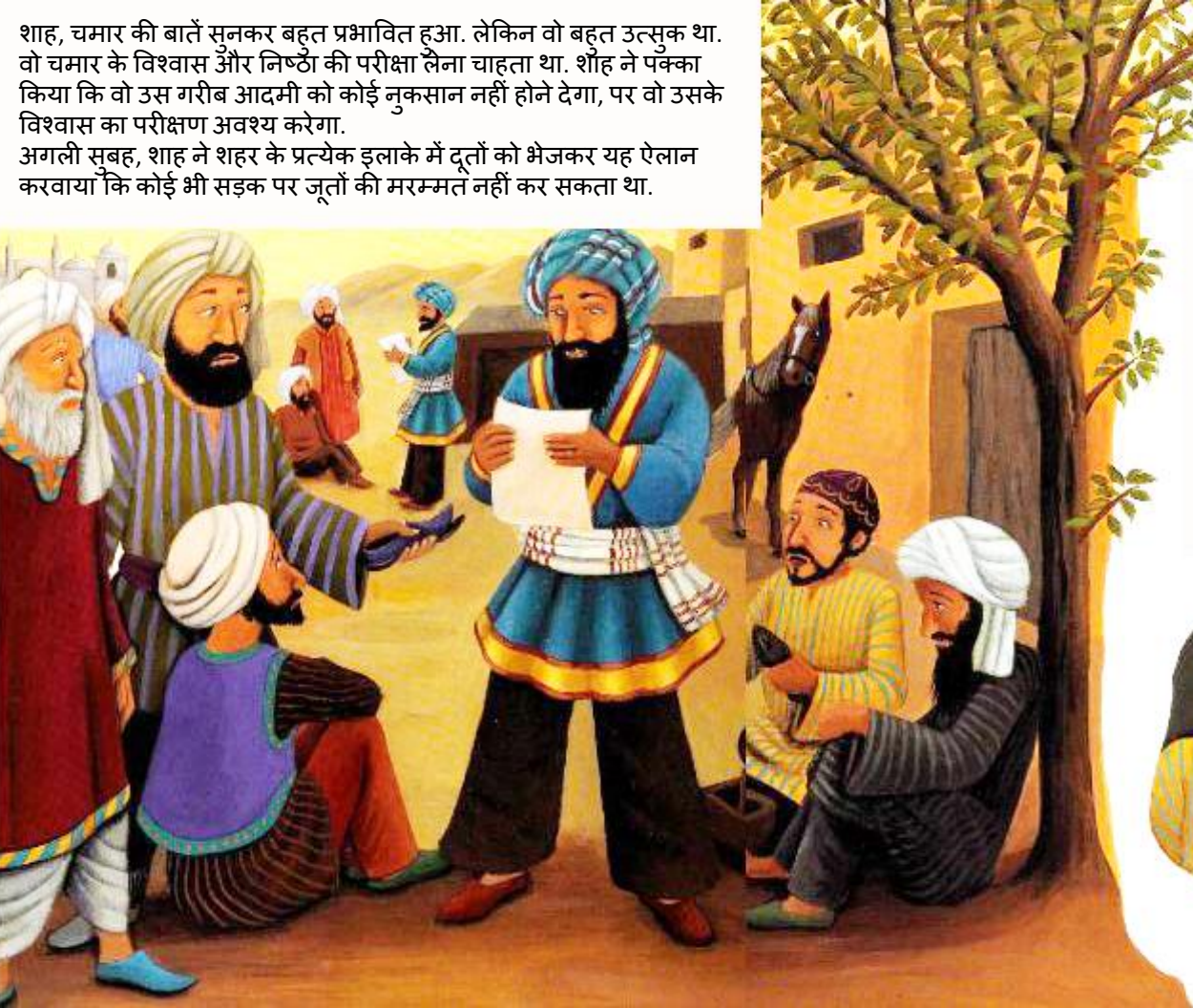

"इससे हम लोग बर्बाद हो जायेंगे!" चमार की पत्नी ने कहा. "अब हम क्या करेंगे?"
"चिंता मत करो," चमार ने जवाब दिया. "हमारे जीवन में पहले भी तमाम मुसीबतें आई हैं, लेकिन उनसे कोई फर्क नहीं पड़ा है. सब कुछ ठीक वैसे ही होगा, जैसा उसे होना चाहिए.

फिर चमार शहर की गलियों में आगे चला. थोड़ी देर में उसे प्यास लगी और वो पानी पीने के लिए रुका. उसने देखा कि एक पानी वाला अपनी मशक भर रहा था. "क्या कोई आदमी पानी बेंचकर अपनी रोज़ी-रोटी कमा सकता है?" चमार ने पूछा. "हाँ ज़रूर, अगर उसके मजबूत हाथ हों," पानी बेंचने वाले ने जवाब दिया.

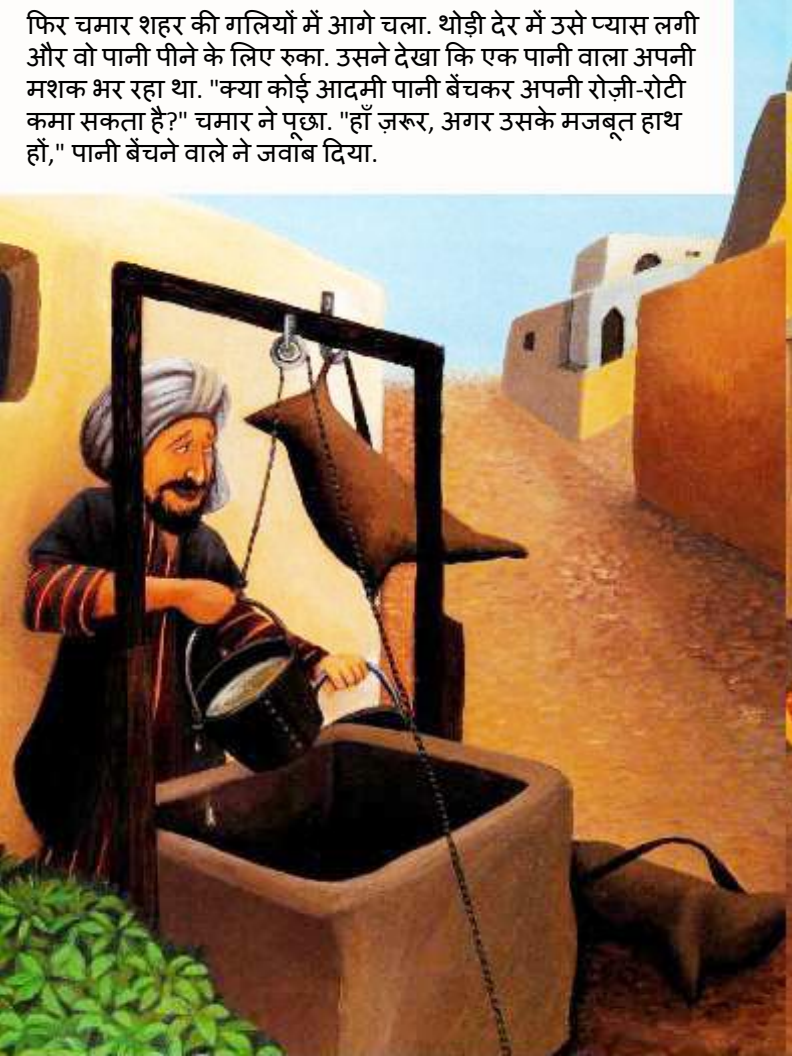

जल्दी से, गरीब चमार ने एक पानी की एक मशक भरी. पूरे दिन, उसने तंग और घुमावदार गलियों में पानी बेचा. शाम तक, उसने खाना खरीदने के लिए पर्याप्त पैसे कमा लिए थे.

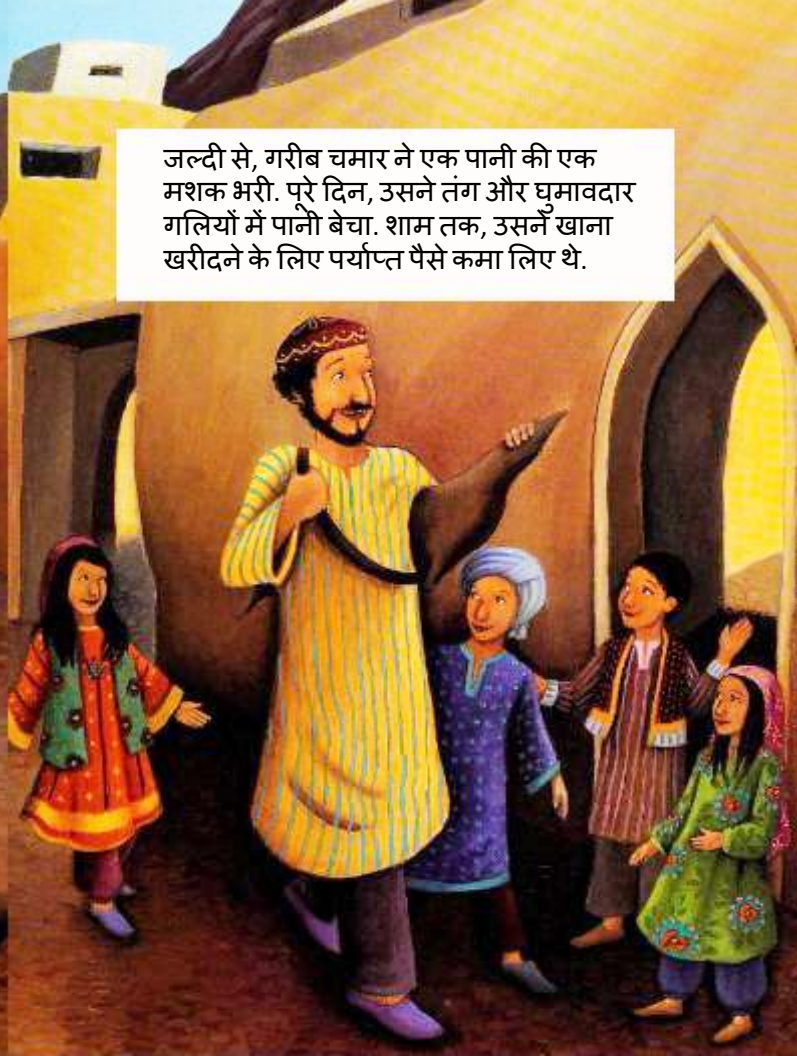

जब सूरज की आखिरी किरणें ढलीं तब शाह ने शाम की प्रार्थना की. उसके बाद वो उस घर में गया जहाँ गरीब चमार अपनी पत्नी एक साथ रहता था.
"अंदर आओ, मेरे दोस्त," गरीब चमार ने कहा. "आओ हमारे साथ खाना खाओ." पर असल में वे खुद भूखे थे.

"मैं पूरे दिन तुम्हारे बारे में ही सोच रहा था," शाह ने चमार से कहा. "जब मैंने उस शाही फरमान के बारे में सुना, तो मुझे डर लगा कि कहीं तुम्हारे भगवान ने तुम्हें छोड़ तो नहीं दिया .... और वो कहीं और तो नहीं चले गए."
"कभी नहीं," गरीब आदमी ने हँसते हुए कहा, "मेरा भगवान हमेशा मेरे साथ ही रहेगा. देखो अब मैं पानी बेंचने का काम करता हूं. वैसे वो एक कठिन काम है, और मैं पहले की तुलना में कम कमाता हूं, फिर भी शुक्र है कि मेरी जरूरतें पूरी हो जाती हैं. इसलिए आप देखें, चीजें बिल्कुल वैसी ही हैं जैसी वे होनी चाहिए."

शायद यह परीक्षण पर्याप्त नहीं था, शाह ने सोचा.
फिर अगले दिन सुबह शाह ने नया फरमान ज़ारी किया - कि अब कोई भी सड़क पर पानी नहीं बेच सकता था.
"यह तो बड़ी बर्बादी है!" गरीब आदमी की पत्नी ने कहा. "अब हम क्या करेंगे?"
"चिंता मत करो," चमार ने कहा. "अब मैं जूते नहीं सिल सकता और पानी नहीं बेंच सकता, लेकिन मुझे विश्वास है कि कुछ नया होगा."

तभी उसी पल उसकी खिड़की के बाहर लकड़हारों का एक दल गुज़रा. चमार उनसे मिलने के लिए दौड़ा.

"क्या कोई आदमी लकड़ी इकट्ठा करके अपनी रोज़ी-रोटी कमा सकता है?" गरीब चमार ने पूछा.

"यदि उसके हाथ पुख्ता हों, और पीठ मजबूत हो, तो वो यह ज़रूर संभव है," उनमें से एक लकड़हारे ने उत्तर दिया.

"मैंने पूरे दिन तुम्हारे बारे में सोचा," शाह ने रात को चमार से पूछा. "शाही फरमान का क्या हुआ? क्या तुम्हें उसकी कोई फ़िक्र नहीं है?"
"बिल्कुल नहीं," चमार ने उत्तर दिया."अब मैं अपने नए धंधे में खुश हूँ, और मैं अपनी ज़रूरत के हिसाब से कमाई कर पा रहा हूँ. काफी कुछ बदला है लेकिन फिर भी सब कुछ ठीक है!"

फिर गरीब चमार ने अपनी कुल्हाड़ी पर धार लगाई.
वो पूरे दिन लकड़ी काटकर उन्हें इकट्ठा करता रहा.
शाम को उसने लकड़ी बेचीं और जो पैसा कमाया उससे उसने रात को खाने के लिए चावल खरीदे.

शाह से देखा की उसका नया परीक्षण भी गरीब आदमी के विश्वास को हिलाने में नाकाम रहा था. फिर अगले दिन शाह ने घोषणा की कि सभी लकड़हारों को शाही रक्षक दल का सदस्य बनाया जाएगा. गरीब चमार को चांदी की तलवार हाथ में पकड़कर शाह के महल में खड़े होने में बहुत गर्व महसूस हुआ. सूर्यास्त के समय, रक्षक दल ने अपने अफसर से पूछा कि उन्हें दिन की दिहाड़ी कब मिलेगी.
"आपको वेतन महीने के अंत में ही मिलेगा," उनके अफसर ने कहा.
"तब तो बड़ी तबाही होगी! हम पूरे महीने क्या खाएंगे?" जब वो खाली हाथ घर लौटा तब चमार की पत्नी ने अपने पति से पूछा. अब रात के खाने की बात तो दूर उनके पास एक छोटी खुबानी खरीदने तक के लिए पैसे नहीं थे. .

उसके बाद गरीब चमार शहर गया और उसने वहां अपनी चांदी की तलवार बेच दी. उन पैसों से वो एक महीने के लिए खाने का सामान खरीद पाया. जब उसकी पत्नी रात के लिए स्वादिष्ट खाना पका रही थी तो चमार ने अपनी कुल्हाड़ी से एक लकड़ी की एक तलवार बनाई. फिर उसने अपनी लकड़ी की तलवार को मयान में रखा - यह उम्मीद करते हुए कि किसी का ध्यान उस पर नहीं जाएगा. उस रात, शाह ने चमार से पानी वाहक, से लकड़हारे, से शाही रक्षक बने, गरीब आदमी को सीटी पर धुन बजाते हुए सुना. चमार हमेशा की तरह अब भी खुश था. "मैं पूरे दिन तुम्हारे बारे में सोचा," शाह ने कहा. "जब मैंने सुना कि तुम एक शाही रक्षक बन गए हो, तो मैं चिंता करने लगा कि तुम आज का रात खाना कैसे खरीदोगे."

गरीब आदमी ने शाह को बताया कि कैसे उसने चांदी की तलवार बेचकर फिर एक लकड़ी की तलवार बनाई थी. चमार ने कहा, "चीजें ठीक-ठाक वैसे ही हैं जैसे उन्हें होनी चाहिए था."

शाह महल में लौट आया. क्या कोई अन्य ऐसा तरीका था जो चमार के भगवान में पक्के विश्वास को हिलाए, उसने सोचा.
अगले दिन, शाह ने गार्ड के मुख्य अफसर को बताया कि वो शाही गार्ड में बदले गरीब आदमी से कहे कि एक घंटे में, उसे एक चोर का गला काटना है.
"अपनी तलवार निकालो और उस चोर का सिर काटो!" मुख्य अफसर ने चमार से कहा. "अब तुम शाही जल्लाद हो!"

"सिर काटो!" गरीब आदमी ने रोते हुए कहा. "मैंने आज तक कभी किसी का सिर नहीं काटा है, और ऐसा करने की मेरी कोई मंशा भी नहीं है!"
"तुम्हारे पास कोई दूसरा विकल्प नहीं है," अफसर ने कहा, "यह शाह की आज्ञा है."
फिर अफसर उस गरीब चमार को एक खुले स्थान पर ले गया जहां पर लोगों की तमाम भीड़ इकट्ठी हुई थी.
"माफ़ करें," गरीब आदमी ने धीमे से विनती की. "क्या मैं एक मिनट के लिए प्रार्थना कर सकता हूँ. आप बुरा तो नहीं मानेंगे?"
"तुम शौक से प्रार्थना करो" मुख्य अफसर ने कहा. "पर उससे स्थिति बिल्कुल बदलेगी नहीं."

गरीब चमार ने अपनी आँखें बंद कीं और वो काफी देर तक प्रार्थना करता रहा.
अंत में मुख्य अफसर उसपर ज़ोर से झल्लाया, "चोर का सर उड़ाओ! समय आ गया है!"
पर गरीब चमार को पता था कि उसे क्या करना है.
"कृपया मुझे वो करने में मदद दें जो सही हो," उसने जोर से प्रार्थना की. "अगर यह आदमी सच में गुनहगार हो, तो मेरी तलवार की धार पूरे काबुल में सबसे तेज हो जाए! लेकिन अगर वो बेगुनाह हो, तो मेरी तलवार, एक लकड़ी की तलवार में बदल जाए."यह कहकर उसने मयान से अपनी लकड़ी की तलवार निकाली और उसे आसमान में ऊँचा उठाया!

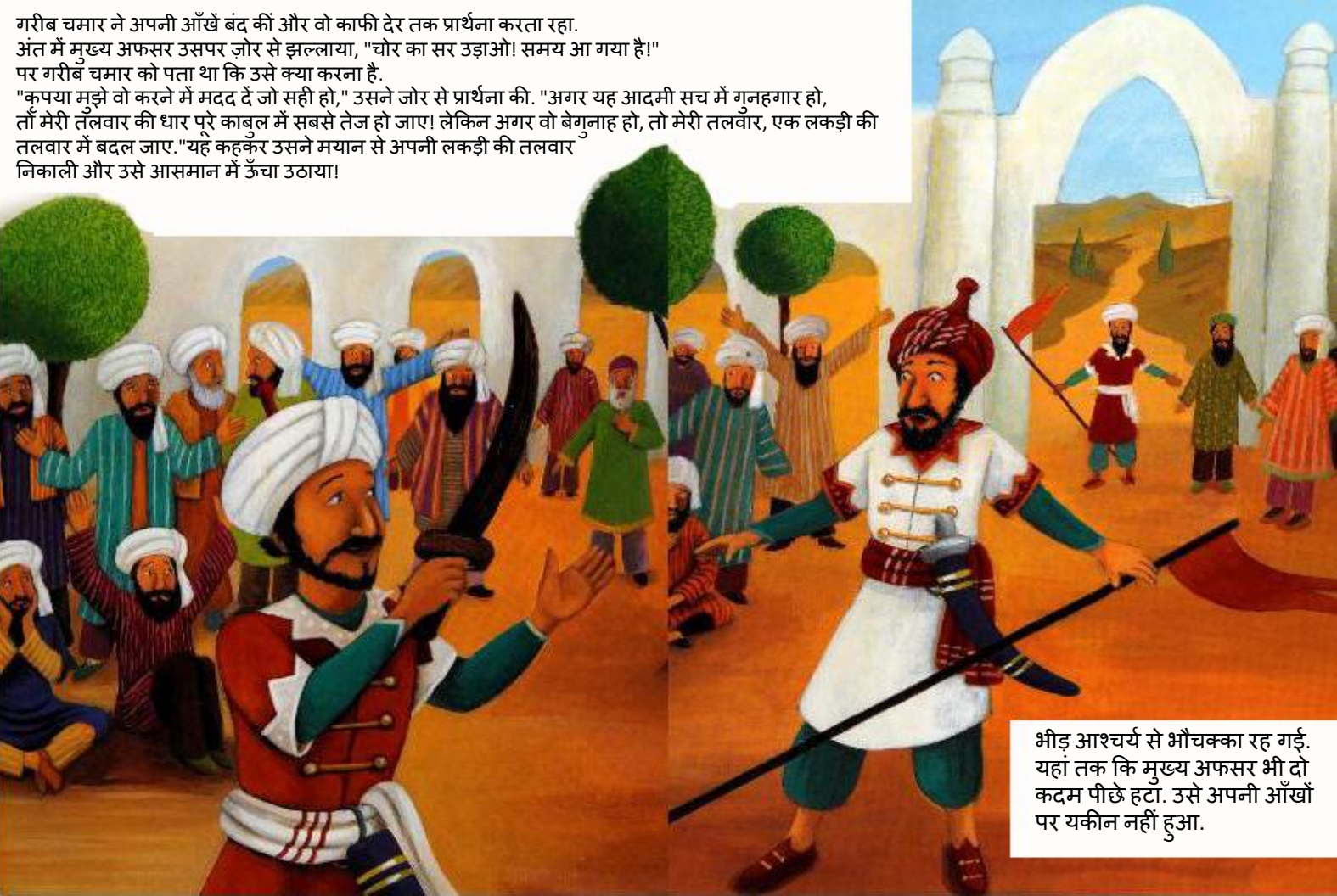

भीड़ आश्चर्य से भौचक्का रह गई. यहां तक कि मुख्य अफसर भी दो कदम पीछे हटा. उसे अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ.

"बस करो!" भीड़ से बाहर निकलते हुए शाह ने आदेश दिया. "आज यहाँ किसी का सर नहीं कटेगा!" और यह कहकर वो हँसा, क्योंकि असल में वहां कोई चोर नहीं था, और न ही किसी के सर कलम की कोई योजना बनाई गई थी.

"तुम तो शाह हो!" चमार ने अपने रात के आगंतुक को पहचानते हुए कहा.

"और तुम एक समझदार इंसान हो," शाह ने कहा. "मेरी प्रार्थना से मुझे पता चला कि मुझे क्या करना चाहिए," गरीब आदमी ने कहा.

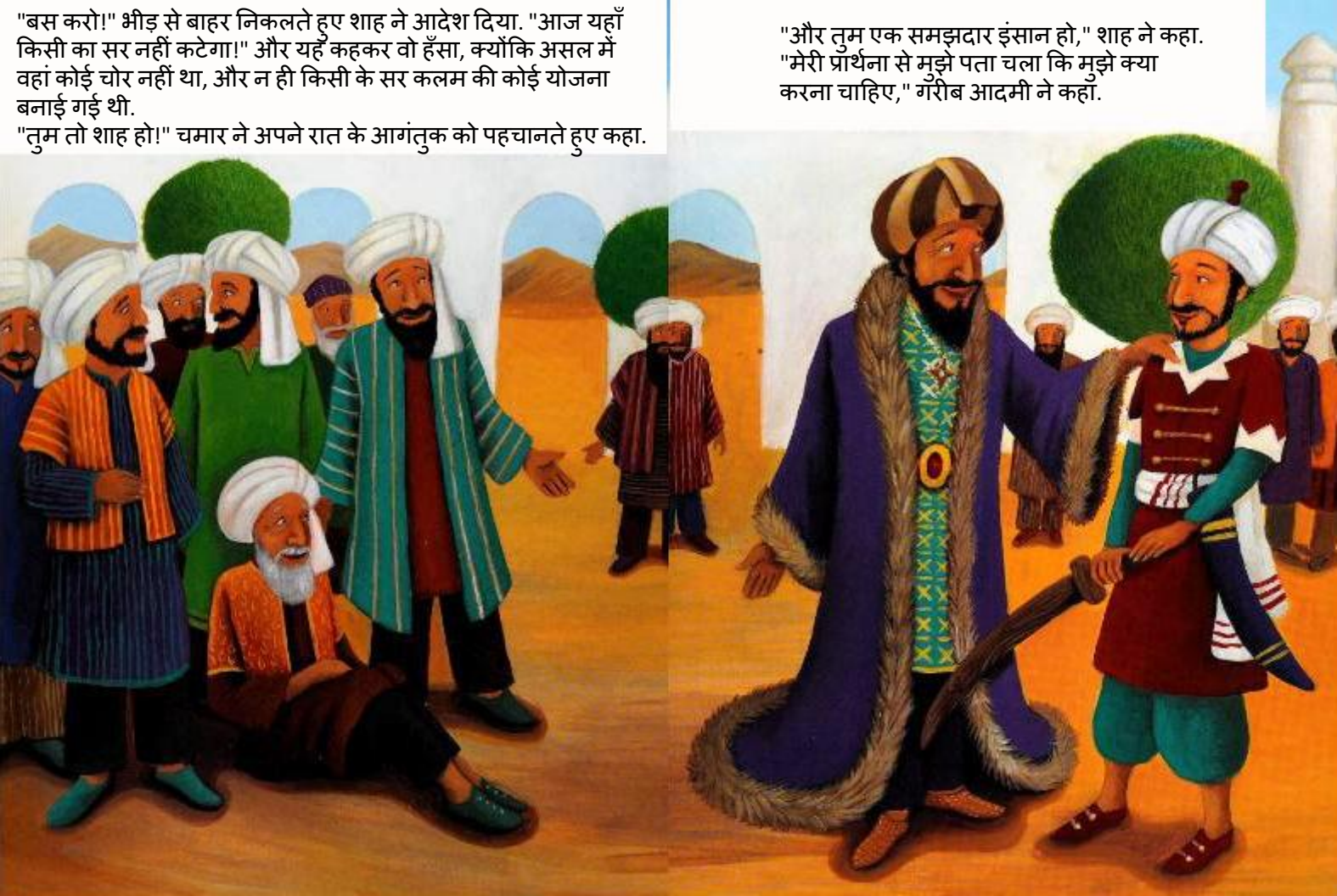

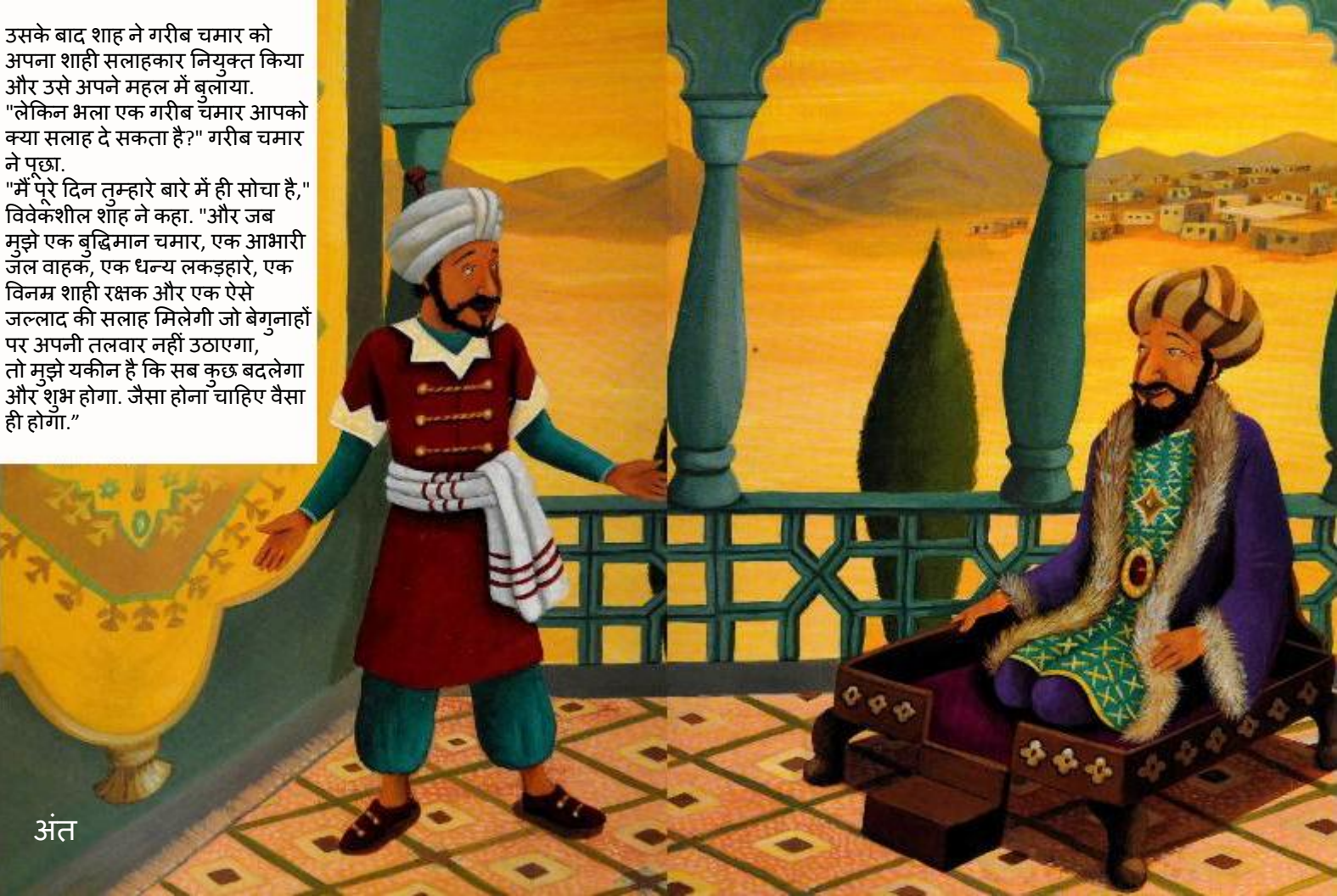
उसके बाद शाह ने गरीब चमार को अपना शाही सलाहकार नियुक्त किया और उसे अपने महल में बुलाया.
"लेकिन भला एक गरीब चमार आपको क्या सलाह दे सकता है?" गरीब चमार ने पूछा.
"मैं पूरे दिन तुम्हारे बारे में ही सोचा है," विवेकशील शाह ने कहा. "और जब मुझे एक बुद्धिमान चमार, एक आभारी जल वाहक, एक धन्य लकड़हारे, एक विनम्र शाही रक्षक और एक ऐसे जल्लाद की सलाह मिलेगी जो बेगुनाहों पर अपनी तलवार नहीं उठाएगा, तो मुझे यकीन है कि सब कुछ बदलेगा और शुभ होगा. जैसा होना चाहिए वैसा ही होगा.”
अंत